कृषि लोक
कृषि एवं किसान के लिए ई-पत्रिका
http://www.rdagriculture.in
e-ISSN No. 2583-0937
कृषि लोक,खंड 02 (04): 170-173, 2022

मूंग की उन्नत खेती

आशा कुमारी एवं प्रियंका खाती

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, गौरयाकर्मा, हज़ारीबाग़, झारखंड-825405

भा.कृ.अनु.प.- विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा-263601

ई-मेल: priyankakhati712@gmail.com

Received: **September 16, 2022;** ***Revised:*** **September 27, 2022** ***Accepted:*** **September 27, 2022**

परिचय

भारत में मूंग ग्रीष्म एवं खरीफ दोनों मौसम की कम समय में पकने वाली एक मुख्य दलहनी फसल है। इसके दाने का प्रयोग मुख्य रूप से दाल के लिए किया जाता है, जिसमे 24-26% प्रोटीन, 55-60% काब्रोहाइड्रेट एवं 1-3% वसा होता है। दलहनी फसल होने के कारण इसकी जड़ो में गठानें पाई जाती है जो की वायुमंडलीय नत्रजन का मृदा में स्थिरीकरण (38-40 किग्रा नत्रजन प्रति हैक्टेयर) एवं फसल की खेत से कटाई उपरांत जड़ो एवं पत्तियों के रूप में प्रति हैक्टेयर 1-5 टन जैविक पदार्थ भूमि

e-ISSN No. 2583-0937

में छोड़ा जाता हैं जिससे भूमि में जैविक कार्बन का अनुरक्षण होता है एवं मृदा की उर्वराशक्ति बढ़ाती हैं।

स्रोत: कुमार गणेशन और बाओजुन जू, 2018

बीज दर व बीज उपचार:

खरीफ में कतार विधि से बुआई हेतु मूंग 20 किग्रा पर्याप्त होता है। बसंत अथवा ग्रीष्मकालीन बुआई हेतु 25-30 किग्रा/है) बीज की आवश्यकता पड़ती है। बुवाई से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम केप्टान 1-2 से 3 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

प्रमुख क़िस्मों के नाम पकने की अवधि एवं उनकी उपज

किस्में	पकने की अवधि (दिन)	उपज (क़िग्रा/है)
नरेंद्र मूंग .1	65.70	12.15
पी डी एंन 54	70.75	10.12
पी एस 16	60.65	10.12
पंत मूंग .4	65.70	12.15
मोहिनी 8	70.75	10.12
के 841	60.65	10.12
र एम जी 62	60.65	10.12
पूसा वैशाखी	60.65	10
वर्षा	55.60	10
जी 14	65	12.15
सुनैना	60	12.15

बुवाई का तरीका:

वर्षा के मौसम में इन फसलों से अच्छा उत्पादन प्राप्त करने हेतु हलके पीछे पंक्तियों अथवा कतारों में बुवाई करना उपयुक्त रहता है। खरीफ फसल के लिए कतार से कतार की दूरी 30-45 सेमी तथा बसंत (ग्रीष्म) के लिए 20-22.5 सेमी रखी जाती है पौधे से पौधे की दूरी 10-15 सेमी रखते हुए 4 सेमी की गहराई पर बोना चाहिए।

मूंग की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु:

मूंग के लिए नम एवं गर्म जलवायु कि आवश्यकता होती है। इसकी खेती वर्षा ऋतू में की जा सकती है। इसकी वृद्धि एवं विकास के लिए 25-32 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल पाया गया है। मूंग के लिए 75-90 सेमी वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त पाए गए है। पकने के समय साफ मौसम तथा 60% आर्द्रता होनी चाहिए। पकाव के समय अधिक वर्षा हानिप्रद होती है।

e-ISSN No. 2583-0937

मुंग की खेती के उपर्युक्त भूमि:

मुंग की खेती के हेतु दोमट से बलुआ दोमट भूमियां जिनका पी.एच. 7.0 से 7.5 हो, इसके लिए उत्तम है। खेत में जल निकास उत्तम होना चाहिए।

भूमि की तैयारी:

खरीफ की फसल हेतु एक गहरी जुताई मिट्टी पलटनेवाले हल से करना चाहिए एवं वर्षा प्रारम्भ होते ही 2-3 बार देशी हल या कल्टीवेटर से जुताई कर खरपतवार रहित करने के उपरांत खेत में पाटा चलाकर समतल करें। दीमक से बचाव के लिए क्लोरपायरीफॉस 1.5% चूर्ण 20-25 किग्रा/हैक्टेयर खेत की तैयारी के समय मिट्टी में मिलाना चाहिए। ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती के लिए रबी फसलों के कटने के तुरंत बाद खेत की तुरंत जुताई कर 4-5 दिन छोड़ कर पलेवा करना चाहिए। पलेवा के बाद 2-3 जुताई या देशी हल या कल्टीवेटर से करपाटा लगाकर खेत को समतल एवं भुरभुरा बनावें। इससे उसमें नमी संरक्षित हो जाती है व बीजों से अच्छा अंकुरण मिलता है।

खाद एवं उर्वरक:

मुंग की खेती में अच्छे उत्पादन के लिए बुवाई से पूर्व खेत तैयार करते समय अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 15 -20 टन/एकड़ की दर से मिट्टी में मिला देना चाहिए। रासायनिक खाद एवं उर्वरक की मात्रा किलो ग्राम (है) होनी चाहिए, नाइट्रोजन 20, फास्फोरस 20, पोटाश 20, गंधक 20, जिंक 20, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस व पोटाश उर्वरकों की पूरी मात्रा बुवाई के समय 5-10 सेमी गहरी कुंड में आधार खाद के रूप में दें।

हानिकारक कीट एवं रोग और उनका रोकथाम

कीट नियंत्रण:

मूंग की फसल में प्रमुख रूप से फली भृंग, हराफुदका, माहू तथा कम्बल कीट का प्रकोप होता है।पत्ती भक्षक कीटों के नियंत्रण हेतु क्विनाल फासकी 1.5 लीटर या मोनोक्रोटोफॉस की 750 मिली तथा हराफुदका, माहू एवं सफेद मक्खी जैसे-रस सूचक कीटों के लिए डायमिथोएट 1000 मिली प्रति 600 लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल प्रति 600 लीटर पानी में 125 मिली दवा के हिसाब से प्रति हेक्टेयर छिड़काव करना लाभप्रद रहता है।

रोग नियंत्रण:

मूंग में अधिक तरपीत रोग, पर्णदाग तथा भभूतिया रोग प्रमुख तया आते हैं। इन रोगों की रोकथाम हेतु रोग निरोधक किस्में हम-1, पंतमूंग-1, पंतमूंग-2, टीजेएम-3, जेएम-721 आदि का उपयोग करना चाहिये। पीत रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है इसके नियंत्रण हेतु मेटासिस्टॉक्स 25 ईसी 750 से 1000 मिली का 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर छिड़काव 2 बार 15 दिन के अंतराल पर करें। फफूंद जनित पर्णदाग, अल्टरनेरिया, सरकोस्पोरा, माइरोथीसियस, रोगों के नियंत्रण हेतु डायइथेनएम-45, 2.5 ग्राम/लीटर या कार्बेन्डाजिम, डायइथेनएम-45 की मिश्रित दवा बनाकर 2.0 ग्राम, लीटर पानी में घोलकर वर्षा के दिनों को छोड़कर खुले मौसम में छिड़काव करें।आवश्यकतानुरूप छिड़काव 12-15 दिनों बाद पुनः करें।

मूंग के प्रमुख रोग एवं नियंत्रण:

पीला चितकबरी: मोजेक रोग-रोग प्रतिरोधी अथवा सहनशील किस्मों जैसे टीजेएम-3, के-851, पन्तमूंग-2, पूसा विशाल, एचयूएम-1, का चयन करें। प्रमाणित एवं स्वस्थ बीजों का प्रयोग करें। बीज की बुवाई जुलाई के प्रथम सप्ताह तक कतारों में करें प्रारम्भिक अवस्था में रोग ग्रसित पौधों को उखाड़ कर नष्ट करें। यह रोग विषाणु जनित है जिसका वाहक सफेद मक्खी कीट है जिसे नियंत्रित करने के लिये ट्रायजोफॉस 40 ईसी, 2 मिली प्रति लीटर अथवा थायोमेथोक्साम 25 डब्लूजी 2 ग्राम/ली या डायमेथाएट 30 ईसी, 1 मिली/ली पानी में घोल बनाकर 2 या 3 बार 10 दिन के अंतराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।

सर्कोस्पोरा पर्णदाग: रोग रहित स्वस्थ बीजों का प्रयोग करें। खेत में पौधे घने नही होने चाहिए। पौधों का 10 सेमी की दूरी के हिसाब से विरलीकरण करें। रोग के लक्षण दिखाई देने पर मेन्कोजेब 75 डब्लूपी की 2.5 ग्राम लीटर या कार्बेन्डाइजिम 50 डब्लूपी की 1 ग्राम/ली दवा का घोल बनाकर 2-3 बार छिड़काव करें।

e-ISSN No. 2583-0937

एंथ्राक्नोज: प्रमाणित एवं स्वस्थ बीजों का चयन करें। फफूंद नाशक दवा जैसे मेन्कोजेब 75 डब्लूपी 2.5 ग्राम/ली या कार्बेन्डाजिम 50 डब्लूडी की 1 ग्राम/ली का छिड़काव बुवाई के 40 एवं 55 दिन पश्चात करें।

चारकोलविगलन: बीजापचार कार्बेन्डाजिम 50 डब्लूजी 1 ग्राम प्रति किग्रा बीज के हिसाब से करें। 2-3 वर्ष का फसल चक्र अपनाएं तथा फसल चक्र में ज्वार बाजरा फसलों को सम्मिलित करें।

भभूतिया: पाउडरी मिल्ड्यू रोग रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें। समय से बुवाई करें। रोग के लक्षण दिखाई देने पर कैराथन या सल्फर पाउडर 2.5 ग्राम/ली पानी की दर से छिड़काव करे।

खरपतवार नियंत्रण:

मूंग की फसल में खरपतवार नियंत्रण सही समय पर नहीं करने से फसल की उपज में 40-60 प्रतिशत तक की कमी हो सकती है। खरीफ मौसम में फसलों में सकरी पत्ती वाले खरपतवार जैसेः सवा, इकाईनाक्लोक्लोवा कोलाकनम सगेली, दूब घास, साइनोडॉन डेक्टाइलोन एवं चौड़ी पत्ती वाले पत्थर चटा, ट्रायन्थिमा मोनोगायना कनकवा, कोमेलिना वेघालेंसिस, महकुआ, एजीरेटम कोनिज्वाडिस सफेद मुर्ग, सिलोसिया अर्जेंसिया, हजारदाना, फाइलेन्थस निरुरी एवं लहसुआ, डाइजेरा आरसिस तथा मोथा, साइप्रस रोटन्डस, साइप्रस इरिया आदि वर्ग के खरपतवार बहुतायत निकलते हैं। फसल व खरपतवार की प्रतिस्पर्धा की क्रान्तिक अवस्था मूंग में प्रथम 30 से 35 दिनों तक रहती है। इसलिए प्रथम निंराई-गुड़ाई 15-20 दिनों पर तथा द्वितीय 35-40 दिन पर करना चाहिए। खरपतवार नाशक पेंडीमिथिलीन 700 ग्राम/हैक्टेयर बुवाई के 0-3 दिन तक, क्युजालोफाप 40-50 ग्राम बुवाई के 15-20 दिन बाद छिड़काव कर सकते है।

सिंचाई एवं जल निकास:

प्रायः वर्षा ऋतु में मूंग की फसल को सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है फिर भी इस मौसम में एक वर्षा के बाद दूसरी वर्षा होने के बीच लंबा अन्तराल होने पर अथवा नमी की कमी होने पर फलियां बनते समय एक हल्की सिंचाई आवश्यक होती है। बसंत एवं ग्रीष्म ऋतु में 10-15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई की आवश्यकता होती है। फसल पकने के 15 दिन पूर्व सिंचाई बंद कर देना चाहिए। वर्षा के मौसम में अधिक वर्षा होने पर अथवा खेत में पानी का भराव होने पर फालतू पानी को खेत से निकालते रहना चाहिए जिससे मृदा में वायु संचार बना रहता है।

कटाई:

मूंग की फलियों जब काली पड़ने लगे तथा सुख जाये तो फसल की कटाई कर लेनी चाहिए। अधिक सूखने पर फलियों चिटकने का डर रहता है। फलियों से बीज को थ्रेसर द्वारा या डंडे द्वारा अलग कर लिए जाता है।

भण्डारण:

कटाई और गहाई करने के बाद दानों को अच्छी तरह धूप में सुखाने के उपरान्त ही जब उसमें नमी की मात्रा 8 से 10 प्रतिशत रहे तभी वह भण्डारण के योग्य रहती है भण्डारण के सूत के बोरे का उपयोग करे और नमी रहित स्थान पर रखें।